अध्याय - दूसरा

मनो विज्ञान :- सिध्दांत एवं तत्व

अनुक्रमणिका :-

1. मनोविज्ञान - सिध्दांत पक्ष और साहित्य
2. मनोविज्ञान शास्त्रका उदय
3. विभिन्न संप्रदाय और उनका दृष्टीकोण
4. मनोविज्ञान के मुलभूत सिध्दांतोंका साहित्यसे संबंध
5. साहित्यका वर्तमान युग
6. हिंदी नाटकमें मनोविज्ञानके प्रवेशकी पृष्ठभूमि
7. 20 वी शताब्दीके पाश्चात्य नाटककारोंका मनोविज्ञानिक दृष्टीकोण
8. परिशिष्ट
   1. मुल प्रवृत्तियाँ
   2. मेक्डुगल ध्दारा प्रतिपादित मुल प्रवृत्तियाँ
   3. Our primary wants

मनोविज्ञान :- सिध्दांत एवं तत्वं

1) मनोविज्ञान सिध्दांत पक्ष और साहित्य :

20 वी शताब्दीके कालमे मनो विश्लेषण वाद, भौतिकवाद, व्दंदात्मक भौतिकवाद आदी विविध विचारोंने अपना स्थान साबित किया है। भारतिय वीचारधारा एवं चेतना के प्रभावके कारण व्यक्तीके प्रति मानवका सारा दृष्टीकोण ही बदल गया। मनो विश्लेषण पध्दतीके व्यक्ती,नारी, पुरुष आदि के प्रति - बहुत ही क्रांतीकारी दृष्टी दे डाली। इसीलिये हमे मनोविश्लेषण वादकी मूल प्रवृत्तीयाँ एवं तत्वोंका विचार करना आवश्यक है। जिसका प्रभाव साहित्यके अंगोपरभी रहा। प्रेमचंद युगोत्तर कालमें यह प्रभाव अधीक पडा। प्रेमचंद और प्रसादपरभी यह प्रभाव रहा। प्रेमचंद युगमें मनो विज्ञान था पर प्रेमचंदतोत्तर युगमें मनो विश्लेषण आया। मूलत: जिन तीन नये मनो वैज्ञानिकोंका प्रभाव रहा। वे है फ्राईडका मनोविश्लेषणवाद, एडलरका व्यक्तीमनोविश्लेषण वाद, युंगका - विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान। मैकडुगाल का भी कुछ प्रभाव रहा।

2) मनोविज्ञान शास्त्रका अर्थ :-

मनोविज्ञान शास्त्र भारतके लिये नया विषय नहीं है। हमारे पूर्वज मानवशास्त्रको जीवनका तत्वज्ञान कहते थे। जिसमें मन इथेली चेतन मन आदिका अध्ययन किया है। Super conscious चेतन मन का गीतामें आत्मा, परमात्मा, ब्रम्ह आदि संबोधनोंमें दिये गये है। राम कृष्ण परमहंस विवेकानंद, आचार्य शंकराचार्य, ने भी आत्मापर, ब्रम्ह का संबंध मन (आत्मा) से ही लगाया है। प्राचीन कालसे मनको दर्शन शास्त्र या तत्वज्ञान (Philosophy) कहा गया है।

पश्चिमी शास्त्रज्ञ प्लेटो, अरस्तु, लोकीन, डेकार्ट, कुंट ने भी - मनपर विचार किया है। पश्चिमी शब्द Psychology - physhe अर्थात आत्मा Logos अर्थात विचार विमर्श आत्माके विचारोंको समझाना।

प्लेटोने आत्माकों विचारोंकी अलग सत्ता एवं स्वतंत्रका कहा है। अरस्तुने शरीरका पूर्ण संचालक मन को कहा है। गलीन ने भी मानव - शरीरमें आत्माको कार्य को माना है। वुंटने सर्वप्रथम मनोविज्ञानकी शाला खोली। उसने मनो विज्ञानको चेतना का विज्ञान कहा है। जीवनमें - मनुष्य जिन अनुभवोंको एकत्रित करता है उसके मनपर वे अंकित होते है। मनको पहचाननेके लिये अनुभवम उपयुक्त होते है। मानवकी मानसिक शक्तीका इसी करण महत्व है। मानसिक जीवनमें संवेदनाओंका अभ्यास होना आवश्यक है। जीवनमें प्रत्यक्ष अनुभव व्दाराही ज्ञान प्राप्त होता है।

नववी शताब्दीके आरंभकालमें गाल ने मास्तिष्क स्थापना Theory of Localization) का सिध्दांत प्रतिपादित किया है। जिसमें मास्तिष्क विकास वंशानुगत परंपरा पर निर्भर होता है। जिसमें - भावात्मक गुण होते है। नववी शतीके मध्यमें डार्विनका विकासवाद (Theory of Evaluation) आया। जिसमें मन और शक्तीका - वैज्ञानिक विकास हुआ। आगे चलकर बडे बडे [illegible] - संप्रदाय खडे हुये। जिनमें चेतना, समायोजन संघर्ष, आदिका विचार किया गया। गाल्टन ने भी व्यक्ती विभिन्नताके Individual difference सीध्दांतको स्थापित किया। इसमें स्मरण, चिंतन, विस्मरण, भाव, ध्यान आदि मानसिक प्रक्रियाओंका प्रयोगात्मक अध्ययन किया गया।

आगे चलकर टिचनेरका अस्तित्व वाद, पिनेलका व्यवहारवाद, शुरु हुआ। सिग्मंड फ्रायडने भी मंदबुध्दी एवं विकृत बुध्दीवाले व्यक्तीयोंके विषयका अध्ययन किया है। इसके चेतन-अचेतन और अर्ध्दचेतन प्रमुख थे। आगेचलकर जो इदम् अहम् और नैतिक अहम् के नामसे परिचित रहे। पावलॉव का चेतन अनुभूमि एवं अंतनिरिक्षण विधिका विशेष महत्वपूर्ण है।

३) <u>विभिन्न संप्रदाय और उनका दृष्टीकोन</u> :-

१) वातावरणवादी अेवं आचरण वादी संप्रदाय (Behaviourism)

वॉटसनके विचारानुसार मनोविज्ञान विचार या आचरण का व्यवहार है। जिसका संबंध चेतना या अनुभवसे नहीं है। निरीक्षण एवं प्रयोगसेही व्यवहारका संबंध है। व्यवहार उत्तेजन के कारण ही शरीरकी प्रतिक्रिया होती है। इसीलिये मनोविज्ञान उत्तेजना प्रतिक्रिया (S _ R) का विज्ञान है। व्यवहार वादियोंका स्मृति ((Memory)) में विश्वास है। वॉटसन के मतानुसार मूल प्रवृत्तियाँ जन्मजात नहीं होती। वे वातावरणमें बन जाती है। जिस प्रकार का वातावरण होगा उस प्रकारकी बालकोंकी आदते होंगी। अच्छे या बुरे वातावरण में बालक अच्छे या बुरे बनते है। अत: मन मस्तिष्कका एक उपविकार ही कहा जा सकता है।

2) संपूर्णवादी संप्रदाय /- (Gestalt- psychology)

गेस्टाल्ट मनोविज्ञान संगठित समाष्टीको देखता है। गेस्टाल्ट का अर्थ है समग्र रूप। मानव पशु या वस्तु एक भागसेही संपूर्ण नही है। सभी अवयव ऐक दूसरोसे संबंधित है। संपूर्ण शरीर समाष्टिके रूपमें काम, करता है। पव्हलाव्ह और लाशलीनेका यह सिद्ध किया है कि, स्नायुतंतु संगठीत होकर कार्यपूर्ण करते है। गेस्टाल्टवादी किसी भी वस्तुको इकाईमें देखते है। यह मनोविज्ञान आकृती और पृष्ठभूमि या आधारदृष्टी, प्रत्यक्ष श्रवण, स्पर्श प्रत्यक्षमें होती है। गेस्टाल्टने व्यक्तीत्व की समाष्टि रूपमें देखा। व्यक्तीत्व अनेक गुणों, लक्षणों से बनता है। व्यक्तीत्व संगठित समाष्टी है। गेस्टाल्टवादीयोंने प्रात्यक्षिकरण सीखना, स्मरण, स्पर्श श्रवण आदि क्रिया ओंका समग्ररूपमें अध्ययन किया।

प्रवृत्तवादी संप्रदाय :-

" मैकडूगलने 14 मूल प्रवृत्तियाँ बताई है, उनके अनुसार मानव में ये प्रवृत्तीयाँ अत्यंत सहज रूपसे प्रकट होती है। तथा उन प्रवृत्तीयोंका संबंध परिस्थीके तथा अनुभवसे परिवर्तित होता है।

मनोविश्लेषण संप्रदाय :-

फ्राईड :-

सिग्मंड फ्राईडचेतन और अचेतन मन विचारको विकसित करने की दिशा दिखानेवाला सचेतन और अचेतन मनका अंगीकार करने वाला सिग्मंड फ्राईड है । अंतर्मनकी और उनका विचार अधिक था । अंदर दबी हुयी शक्तीयो जो मस्तिष्क में संघर्ष निर्माण करती है । चेतन और अचेतन मनमें एक और तिसरा भाग है । जिसकी स्थिती अर्धचेतनके रूपमें मानी गयी है । फ्राईड के अनुसार अचेतन मन चेतन मनसे अधिक व्यापक एवं शक्तीमान है । - परोक्ष रूपमें अचेतन मन भी सदैव क्रियाशील रहता है । सब क्रिया इससे प्रभावित या प्रेरित रहती है । अचेतन मनमें इसकी इच्छायें तथा क्रियायें - निर्मित होती है । पर कुछ कारण वश वे पूरी नहीं हो सकती। चेतन मनमें दबी अनेक इच्छायें सक्रिय होनेका बारबार प्रयत्न करती है । इसीलिये प्रहरी जैसा खडा होकर सामना करने वाले चेतन मनका सामना करना पडता है । फ्राईड इसे दमित काम रहता है । दमित कामका परिणाम व्यक्तीत्व पर होता है । ईर्षा, काम, क्रोध, व्देश करूणा, निराशा, मालिन्य,आदि अनेक विकार ग्रंथियाँ निर्माण करती है । दमित कामना अचेतन मनमें छिपी रहती है । यह कामप्रवृत्ती जन्मसे मृत्यूतक अनेक रूपोंको धारण करके - मानसिक संचालन करती है ।

स्वप्न विश्लेषण :-

कामवासना, कुंठा, अवसाद, विशेषत: स्वप्नावस्थामें मुक्त रूपमें साकार या विचित्र रूप लेकर विचरण करती है । प्रतिकों व्दारा इच्छाओंकी पूर्ति करती है । दमित कामवासना का रूप साकार बनता है । स्वप्नमें दिखी हुई हर चीजकी अर्थ कामपूर्तिमें लगानेका प्रयत्न फ्राईडने किया है । क्योंकी फ्राईड के मतानुसार स्वप्न प्रतिकों व्दारा इच्छापूर्ति की जाती है । जो काम प्रवृत्ती के प्रतिक है । नैतिक मन की दृष्टीसे यह इच्छा अत्यंत अश्लील होती है । परंतु स्वप्न व्दारा इच्छा तृप्ती होती है । काल्पनिक तृप्तीसे

अज्ञात मनकी तृप्ती होनेका यह एक अच्छा साधन है ।

मुक्तबद्धता सिद्धांत :-

फ्राईडने मुक्तबद्धता शक्ती (Libido) का अर्थ व्यापक लगाया है । ये एक शक्ती अत्यंत प्रबल होती है । इसका नैतिक मनसे या समाजकी नैतिक धारणाओं से कोई संबंध नहीं है । लिबिडो कामशक्ती है । फ्राईडने इसका संबंध रति-प्रेम, आत्मा-प्रेम, मातापिता-प्रेम, बालकप्रेम, मित्रता, स्नेह ममता, दया, आकर्षण, सहानुभूति, तथा अमूर्त वस्तुओंके प्रति श्रद्धा आदिसे लगायी है । यह कामशक्ती विभिन्न अवस्थामें कार्य करती है । जैसे इड, इगो, सुपरइगो, इन अवस्थाओंको देखनेके पहले हम मनकी तीन अवस्थाओंका विचार करेंगे ।

1. इड्	इद्	(चेतन)
2. इगो	अहम्	(अचेतन)
3. सुपरइगो	अतिअहम्	(अर्धचेतन)

इड :

इसका नैतिकता वास्तविकता, आदिसे कुछका कोई सरोकार नहीं है । ये जन्मजात इच्छायें, तुरंत पूर्तिके लिये सक्रिय रहती है । कामेच्छा यह सभी प्राणियोंकी मूल प्रवृत्ती है । व्यक्तीत्वसे इसका कोई संबंध नहीं है । यह मूल आदिशक्तीका रूप है ।

इगो:

इगो दबी हुयी दामित इच्छा एवं कुंठाओंको बारबार ब रोकता हुआ सामाजिक मूल्योंके प्रति, व्यक्तीत्वके प्रति, सदैव जागृत रहता है । बौद्धीक अंश और सर्व भविष्यके प्रति सोचना आदिके कारण यह सक्रिय होता है । अहम् स्वयं शक्तीमान नहीं है । इसलिये वह इदम् परही निर्भर रहता है ।

सुपरइगो :

सुपरइगोका अंकुश इदम् और अहम्‌परभी नियंत्रण रखता है। नैतिकता सामाजिक मान्यता संस्कार परंपरा, धार्मिकता, व्यक्तीत्व आदि मूल्योंका प्रतिनिधीत्व मनके व्दारा होता है। फ्राइडने नैतिक मनको अहम् का आदर्श माना है। मनकी सभी क्रिया अहम् के बोध - निरीक्षक [(Censor)] का काम करती है। फिरभी ये सब मनो कामुकता (Psycho sextuality) पर आधारित है। इसके लिये इसका संबंध काम शक्तीसे है। ये अवस्थायें बाह्य वस्तुओंकी ओर स्थिर होती विकास की साधारण अवस्था मानी जाती है।

कामशक्तीकी विशेषतायें :-

1. **आरोपण** :- Projection

मनकी गुप्तक्रिया जो दमनके कारण उत्पन्न होती है। और अपने दुर्गुणोंको कमजोरियोंको दोषोंको [illegible] औरों के कारण आरोपित करती है। फ्राइड इस क्रिया ओंको आरोपणकहता है। इससे अपने स्वाभिमानकी रक्षा होती है। अपने त्रुटियोंका आरोपण दूसरोंपर लगाया जाता है। [illegible] फ्राइडने इसे इंद्रिय वासना तृप्ती (Pleasure principle) [illegible] कहा है।

2] **तादात्मिकरण** :- Identification

व्यक्ती अपने को किसी अन्य अच्छे व्यक्तीके अनुसार मानने लगाता है। अपने व्यक्तीत्व में कुछ व्याक्तिसे इवा तदात्म्य स्थापित किया जाता है। तादात्म्किकरण मे हम दूसरोंके दोषभी अपने मान लेते है। अर्थात वह व्यक्ती प्रिय होना चाहिये।

3] **स्थानांतरीकरण** :- Transference

स्थानांतरीकरण मनकी वह गुप्त क्रिया है, जिसके व्दारा मनुष्य

अकारण व्देष ,प्रेम,ईर्षा की भावना आरोपर आरोपित करता है ।

4] अवदरुद्ध :- Fixation

मनुष्य अपनी किसम अवस्था या आदातोंको न छोडकर अुसीपर चिपके रहते है । अपनी वर्तमान स्थितीयोंपर कठिनाईया आनेपर भी पुरानी स्थितीपर टिकना चाहते है । वे आगे वही बढना चाहते । अचेतन मन सुख और रक्षामें अवध ह= रहना चाहता है ।

5] प्रत्यावर्तन : Pregression

यह अवस्था वायस्क होने बादभी किसी संकटकालमे मनका संतुलन खोजानेपर आमयोचित व्यवहार करना "प्रतिगमन" या प्रत्यावर्तन कहा जाता है । प्रत्यावर्तन मे जिसका मानसिक विकास साधारण रीतिसे नही हुआ है अुसकी कामशक्ती Arrest हो जाती है । फिर उपयुक्त परिस्थितीके अभावमें उसका प्रत्यावर्तन हो जाता है ।

6] अुदात्तीकरण : Sublimation

यह सुखदाकी स्थिती है । इस शक्तीकी तृप्ती समाजमें प्रत्यक्ष रूपमें वही हो सकती तब इसी शक्तीका अुपयोग किया जाता है । - फ्राईडकेअनुसार चित्र, मूर्ति, शिल्प, भाषणकर्ता, जनहितैषी, कवितापेम, अभिनय, भाषनाप्रेम, धर्म इ० कामशक्तीका उदात्तीकरण है । फ्राईडने Libido का अर्थ अधिक व्यापक रूपमें लिया है ।

स्त्री-पुरुष कामभावनासे संबंधीत फ्राईड मत :-

फ्राईडवादके अनुसार स्त्री में वासनाकी अभिरुचि निर्माण होती है । ~~इसलिय~~ इसिलिये वासना तृप्ती ही अुसका अद्देश्य रहता है । अगर वासनाकी तृप्ती नही हुई तो कामवासना ईर्षाके रूपमें स्त्री स्वाभावमें व्देश निर्माण करती है । इसी व्देश का परिपालन परिवारिक, सामाजिक,सांस्कृतिक जीवन परभी होता है । सेक्स जीवनका एक महत्वपूर्ण अंग है । जिससे स्त्री विन्मुख नही हो सकती । स्त्री के स्वभावमें कोमलता मृदुता,सहनशीलता-

एम. फिल.

ईर्षा न्याय, अन्यायकी न्यूनता, नैतिकता, अनैतिकता अहंभाव और हीनता तथा अवास्तव हीनता, वासनात्मक जीवन, कुंठात्मीकरण इ० भाव निर्माण एवं विकसित होते है। फ्राईडने एडिपस् ग्रंथिको महत्व पूर्ण माना है। जिसमें कामवासनाकी सबसे बडी प्रबलता होती है। जो बाल्यकालसे ही होती है। इसके बाद स्वलिंग, परलिंग के साथ समयानुसार प्रेम, पुरुष या स्त्री के प्रति काम भावनाकी चाहना और स्वाभाविक आकर्षण होता है।

इसिलिये काम पुरुषोंके जीवनमें काम तृप्तीमहत्वपूर्ण होती है। जिससे - जीवनमें संतुलन स्थापित होता है। वह व्यक्तीत्व एवं चरित्र निर्माण करती है। तथा अन्य परस्पर विपरित प्रवृत्तीयाँ निर्माण करती है। व्यक्तीमत्व के साथ साथ कामजन्य अवपीडन, और कामजन्य परपीडन प्रवृत्तीका समावेश होता है। इसमें भी काम वासना पूर्ति का उद्देश प्रमुख है।

स्त्रीको काल्पनिक जगतमें सुख मिलता है। यह स्वभाव गत है। सेक्सका विचार या तृप्ती दामित हो गयी है तो सारा असर चरित्र - गठनपर हो जाता है। जिससे बाल्यसे लेकर युवाकालतक ईर्षा, द्वेश, अहम्, हीनता आदि भाव निर्माण होते हैं, जो समाजके एवं जीवनके लिये बाधक बन जाते है।

व्यक्तीवादी संप्रदाय : Individual Psychology

एडलरने वैयक्तिक मनोविज्ञान और युंगके विश्लेषिक मनोविज्ञान (analytical psychology) की चर्चा की। एडलरने मनुष्य जीवनके तीन तत्व माने है। जो जीवन पध्दती से परिचित है। व्यक्तीमनोविज्ञान मनुष्यके व्यक्ती वैशिष्ठ्योंको देखता है। उसकी प्रत्येक सक्रियता उसकी प्रत्येक प्रेरणा उसके जीवनकी विशिष्ठता बनाता है। प्रत्येक व्यक्तीका जीवन उससे साकार बनता है। अलग अलग वातावरणमें लगे दो भिन्न पेडोंके समान यह बात - बनती है। प्रत्येक व्यक्तीकी अपनी विशेषता है। कायिक गितमाके कारण मनोविचार निर्माण होते है।

स्वप्नोंका विचार करनेसे स्पष्ट होता है कि, स्वप्न भविष्यकी ओर संकेत करते तथा सचेत करते है । क्यों की वे अपने जीवन लक्ष्यसे संबंधीत होते है । एडलरके अनुसार स्वप्न वर्तमान कालिन समस्याका द्योतक है । इसमें प्रेम और विवाह अत्यंत महत्वपूर्ण है जो मानव जातिकी एकता कल्याण तथा सुस्थितीका द्योतक है । दोनोंके सहकार्य बिना एकता संभव नहीं । विश्वास प्राप्ती भी नहीं ।

एडलर :- नारीकामभावना संबंधी मत :

जिन नारियोंमें पुरुष विरोधी प्रवृत्ती अधिक होती है, उनमें समवर्गीय भावुकता होती है । तो भयंकर होती है । वह हीनता ग्रंथीका क्षतिपूर्ति वरिष्ठतामें करती है और शील स्पर्धाके रूपमें हीनता ग्रंथीकी वरिष्ठता प्राप्त करनेका प्रयत्न होता है । इसलिये एडलर सक्तारक - क्षतिपूर्ति के ही रूपमें देखता है ।

युंग मनोविश्लेषणात्मक मनोविज्ञान : Analytical Psychology

युंगने व्यक्तीके व्यक्तीत्वको अनेक प्रकारमें बाँटा है । प्रत्येक मनुष्य दो प्रकारके स्वभावका होता है । १• अंतर्मुखी 2•बहिर्मुखी अंतर्मुखी प्रवृत्तिके कारण मनुष्य अंतर्मुख अंतर्जगमकी विचारधारासे ही प्रभावित रहता है । परिणामत: चिंतनशील, एकांत प्रेमी, कालप्रेमी और कल्पनामें विचरने वाले बनते है । वे समाजसे दूर रहना पसंद करते है । बहिर्मुखी व्यक्तीत्व सम्पर्कासे बाहर होते है । मिलजुलकर गपशप करना उन्हें भाता है । वे पुरुषोचित होते है । युंगने लुब्धदा शक्तीको विकासात्मक शक्ती माना है । जो अनेक शक्तीयोंकी गठरी है । जो सामुहिक शक्ती है । कामशक्ती इन्ही शक्तीयोंमें से एक शक्ती है । युंगके अनुसार मानवको अगर समझना है, तो जीवन रेखाको भी समझना है । जिसमें सामाजिक, सांस्कृतिक धार्मिक संस्कार निर्माण होते है । इससे मनुष्य अंतर्मुखी या बहिर्मुखी ? समझा जाता है । युंग लुब्धदशक्तीको वृत्तियोंकी गठरी

मानता है। तो फ्राईड उन्हें केवल कामुक प्रवृत्तीयोंका द्योतक मानता है। युंगके मानसिक शक्ती (Psychic eneray) मानी है। लुब्दा इच्छाके समान है जो सभी रूपसे अभिव्यक्त हो सकती है। चाहे वह क्षुधा क्षुब्धा, कामुकता या धार्मिकता हो।

लुब्धा शक्तिका प्रतिकोंमें रूपांतर होता है। प्रतिक बनकर लुब्दा शक्तीके द्योतक या प्रतिनिधीके रूपमें होते है। तब वे धार्मिक विचारोंके रूपमें प्रकट होते है। यह शक्ती क्रियोंके रूपमें प्रकट होती है। इस प्रकार यह शक्ती पुराण कथाएँ संस्कार कल्पना,- तरंग, स्वप्न, बिंब, आदिका रूप धारण कर लेती है। पर मूलत: इन सबका रूप कामुकतासे निर्माण हुआ है। प्रतिकके कारण अचेतन मनमें दमित पडी हुई वासनाओंका या भावनाओंका परिष्कृत रूपमें निर्माण होता है। उसीमें तृप्ती या उपभोगका आनंद मिलता है।

युंग और जीवनरेखा :- Line of life

युंगके अनुसार मनस्तापदमनके कारण होता है। मनस्तापको समझानेके लिये व्यक्तीकी जीवन रेखा समझना जरुरी है। क्योंकी इसी कारण - व्यवहारमें अस्थिरता निर्माण हो सकती है। सांस्कृतिक धार्मिक एवं मनोवैज्ञानिक संस्कारका जिसमें निर्माण हुआ है, उसकी जीवन रेखा स्थिरता या स्वस्थता प्रकट करती है। जिसके बहिर्मुखी, अंतर्मुखी एवं उभयमुखी से संबंध है।

युंग और भावप्रतिमा :- Arch Types

सामुहिक अज्ञात मनमें वंशानुवंश केगुण चले आते है। इन्हीसे आगे भावप्रतिमा बन जाती है। ये भाव प्रतिमाएँ दो प्रकारकी होती है। 1. एनिमस 2. अनिमा. इनमे स्त्री तथा पुरुष गुण क्रमश: होते है।

जिस स्त्रीमें अनिमा की प्रधानता होती है उसके पुरुषत्व अधिक होता है। उपर निर्दिष्ट दोनो गुणोंपर व्यक्तीत्व निर्भर होता है। ये भावप्रतिमाएं बुध्दीवादी प्रतिक्रियाये है। जिनके व्दारा कवि मन प्रेम या विरहके गीत लिख देता है। युंगने नैतिकताका तीन अवस्थाओंमे विभाजित किया है।

1• कामुकता पूर्वकी अवस्था
2• तारुण्यपूर्व की अवस्था
3• तारुण्योत्तर अवस्था या
 ई विकासात्मक अवस्था

4ई मनोविज्ञानके मूलभूतसिध्दांतोंका साहित्यसे संबंध :-

कवि, लेखक, चित्रकार, मूर्तिकार, कलाकार अपनी दैवी शक्तीकी अनुभूतिसे कलाकी निर्मिती करता है। पर फाईडने कलाको अतृप्त वासनाओं की पूर्ती या उदात्तीकरण माना है। लेखक अपनी कल्पनापर शक्तीव्दारा सब प्रकारकी सौंदर्यविभूति को प्राप्त करता है। सत्यका आधार लेकर वह अनुभूतिको साहित्यमें ढालता है। यहापर लेखक, अपनी संवेदनात्मक - कल्पनाओंका सक्रिय बना देता है। यह कल्पना शक्ती सामान्य मनुष्यकी कल्पनासे अधिक होती है। कलाकार कल्पना तरंगमे विचरनेवाले दमित भावनाओंकी शैली व्दारा अंतर्मनकी ओर ले जाकर सारे संघर्षोंको सत्य, शिव और सुंदर रुप देता है। जो पूर्ण रुपसे आनंद मय बन जाता है। कलाकार कल्पनामें रमण करते हुये अज्ञात मनकी उठी हुई स्वेच्छाओंसे आक्रांत होकर अपनी संवेदनाओंको लेकर लेखन बढे है। कलाको प्रकट करता है।

फ्रायडने प्राचीन कलाकृतीको उदात्तीकरण ही माना है। येक मूर्तियाँ कलाकारकी व्यक्तीगत मनोविकारका अविष्कार है। अनानंद, कालीदास, इन्ही अवस्थासे भरे है। इस प्रकार दमित वृत्तीको फ्राईडने कामवृत्ती (Theory of repression of sex) का सीध्दांत मानकर दमित काम प्रवृत्तीही संपूर्ण कलाका कारण माना है।

कविताकी प्रतिकोंद्वारा दमितवासना की पूर्ति करती है।
कवितामें छंदबध्दता एवं लय होनेके कारण आनंद उसकी प्राप्ती होती है। आनंद रतिमय है। उत्तम कलाकृती रतिमय बन जानेके कारण आनंद मयी होती है। फ्राईडने कलाके बारेमें कलाकार की कामवृत्तीका दमन होने के कारण कलाकृती निर्माण होती है ऐसा कहा है। वह उसकी काम प्रवृत्तिका प्रतिक है। परंतु कलाके निर्माण में सदैव सिर्फ कामवृत्तीकाही दमन नहीं व्यक्त होता है बाल्कि अन्तर्भी दृष्टी हो सकती है।

एडालरने कलाके निर्माणको कायिक दोष माना है। व्यक्तीयोंमें अनेक प्रकारके कायिक दोष हो सकते हैं।

अंधे, बहिरे, लूले, आदि मानवको आत्मस्थापन की शक्ती होती है। इसके अनुसार आत्मस्थापनकी पूर्ति के लिये कुछ ना कुछ साधन ढूंढने लगता है। अपनी कमीको दूर करता है। इसी स्थितीमें कलाका कलाका निर्माण हो सकता है। इस प्रकार कला,कायिक हीनता की क्षतिपूर्तिकी निर्मिती है।

युंगका कथन है, "व्यक्तिगत अनुभवकी उपज नहीं होती"। वह जातीय गुणोंको व्यक्त करती है। इसमें वंश परंपरागत विशेषतायें होती है। सामुहिक अज्ञात मनको कलामें विशेष महत्व है। अज्ञात मन कलाकारकी मानसिका स्थिती एवं स्वभावको दर्शाती है। इसीलिये कलाकारकी आत्मस्थापन प्रवृत्ती होती है। फ्राईडने दमित की हुई कामवृत्तीका द्योतक धर्मको माना है। प्रेम में निराश होनेके कारण कामुक व्यक्ती उदासीन हो जाता है।

अपनी भोगविलासकी वस्तुओंसे दूर होकर अपनी उसकी दमित शक्ती देह ईश्वरकी ओर विश्वास रखती है। वह अज्ञात मन व्दारा ईश्वरकोही अपने प्रियका प्रतिरूप मानता है। इसप्रकार ईश्वर भक्ती और पूजाकी आडमें कामवृत्तीका दमन एवं समाधान हो जाता है। कलाकार की उदात्त भावनाही उसकी कला है। उसी प्रकार धर्म और ईश्वर उनका

रूप है । आगेचलकर ईश्वर कोही नैतिक मनका आदर्श प्रतिक माना है । इसके व्दारा आदर्शकी पूर्ति होती है । जो नैतिक मनके आरोपणव्दारा होती है । यह आरोपण अर्थात देशभक्त,समाजसुधारक, धर्मोपदेशक, ज्ञानदाता आदि है । अपराध होनेके कारण व्यक्ती भय ग्रस्त हो जाता है । पूजापाठमें लगा रहता है । निराधार कल्पनामें रममाण होता है । ईश्वरसे अपने अपराधोंकी भी सजा पाना चाहता है ।

युंगके अनुसार अनेक भावनाओंके समान ही धर्म एक भावना है । प्रतिमा है । ईश्वर कामशालिका रूप न होकर वह मानसिक शक्ती का प्रतिरूप है । इनके बारेमें फ्राईड , रविंद्रटैगोर, प्लेटो, व्युलियम जेम्स, एडलर युंग ने विविध विचार दिये है । धर्म मावभावके आधारपर हम तप, त्याग, करूणा, परोपकार, समता, सहिष्णुता, क्षमता, अनान्यासता , अहिंसा विश्वप्रेम, मित्रता, विचार शीलता, दूरदर्शीता, कर्तव्य परायणता आदि गुणोंकी महत्ता प्रदर्शित होती है ।

5] <u>साहित्यका वर्तमान युग:-</u>

साहित्यका वर्तमान युग मनोविज्ञानका युग कहा जाता है । साहित्यका वर्ण्य विषय केवल तिलस्मी, ऐयारी, उपदेश, धर्मप्रसार,विरह-मिलन, भूतप्रेत, श्रृंगारिक भावोंकी प्रकटिकरणें और मनोरंजन नहीं बाकी आधुनि जीवन तथा आधुनि जीवनकी यथार्थतासे,सच्चाई से वह संबंधित है । केवल प्रेमका रोग ही अलापा नहीं जाता है तो बाह्य जीवनमें इसकी समस्याओंपरभी विचार किया जाता है । इन समस्याओंको सुलझानेकी चेष्टा की जाती है । यह सब एक मनोवैज्ञानिक ढंगसे वस्तुपर आकर्षित न होकर मानवी जीवनके मनोजगतमें हाथ डालता है । वह अंतर्जीवन, अचेतन, मन, चेतन, अर्धचेतन मनको पहचाननेकी कोशीश कर रहा है । अब जीवनका सत्य जानना चाहता है । क्योंकी अब कल्पनामें विचरना उसे पसंद नहीं । जीवनकी सच्चाई बताने वाले पात्रोंमें हमें विश्वास है । जिन्हें लेखक अपनी अनुभुतिव्दारा अभिव्यक्त करता है । तथा जीवनकी समस्याओंपर प्रकाश डालता है ।

प्राचीन कालका साहित्य कल्पना रंजितापर आधारित था । अब वह दृष्टी नहीं रही। क्या नाटक, क्या उपन्यास, क्या कथा, - कविता, सबपर आधुनिक युगमें मनुष्य समयकी सीमाओंमें बंधा, जीवन यंत्रवत और संघर्षमय बनने लगा । इस स्थितीमें साहित्यकारने भी लेखन-शिल्पमें परिवर्तित किया । मानवने किये वीकासके अनुसार साहित्य तथा दृष्टीकोण भी विकसित हुवा । भावभूमि की दृष्टीसे स्थूलसे - सूक्ष्मताकी और बढा । शिल्पकी दृष्टीसे घटना कमकी और बढता गया । परिवर्तनीय युगमें परिवर्तनीय शिल्पभी रहा । प्रत्येक युगकी समस्याएं रहती है। साहित्यकार इन बातोंद्वारा युगका प्रतिनिधीत्व करता है । कलाका नया रूप नयी गति, नया विकास, साहित्यमें से दिखने लगा है । आधुनिक युगमें साहित्यके हर विधापर मनोविश्लेषणात्मक ~~बहु-विध~~ रूपसे बडा प्रभाव पडा है । कुछ ही घंटो, मिनटोंमें ~~उसके~~ कथा, नाटक, उपन्यास बन पडता है ।

6) हिंदी नाटकमें मनोविज्ञानके प्रवेशकी पृष्ठभूमि :-

साहित्य एवं गतिशीलता एकही बात बन गई है । अंतर्मुखी चेतनाको पहचाननेका एक विचार बन नाटकोंमें है । इनमें जीवनका यथार्थ सत्य तथा मनोविज्ञान छिपा है । जीवनके मानसिक संघर्षोंको जानना उसके ही मानसिक भूलापोहोंको समझना ही जीवनको वास्तविक रूपका दर्शन है । यही मनोविज्ञानका ध्येय है । इसलिये नाटक भी मानवके अंत:पटलके भीतर परदोंको उलटकर सत्यान्वेषण करने लगा है । मानवका अंत:स्वरूप अनुभूति तथा चेतना को पहचाननेका कार्य मनोवैज्ञानिक नाटक भी कर रहा है ।

गतिशील जीवन :-

मानव सामाजिक प्राणी है । परिवर्तन शील है । परिस्थितीके अनुसार समाज एवं मानवमें परिवर्तन होता है । भूत, एवं वर्तमानकालीन

अनुभवोंका सामंजस्य रखते हुए वर्तमान अभिव्यक्ती क्रियाशील होती है । इस नववी शतीके सारे युगकी नई नई खोजें मानवको सूक्ष्मतम बुध्दीकी ओर ले जा रही है । जीवनके पुराने दृष्टीकोनमें बदल होता रहा । सामाजिक एवं सांस्कृतिक मान्यताएं बदली । व्यक्तीके आदर्श और पर्याय व्यक्तीके बाहरी और भीतरी जीवनमें अधिक वास्तविकता प्रकट करने लगे लगे । पुराने नैतिक मुल्य बदल गये । नयी दृष्टी आयी । साहित्यकारभी यह समझ गया कि, आदर्श एवं मूल्य परिस्थितीके अनुसार बदलते जाते है । हिंदी नाटककारके जीवनपरभी यह परिणाम हुआ । क्रिया प्रतिक्रियाएं उभर आयी । चेतन, अचेतन, अंतरंग सारी भावनाएं शब्दांकित होने लगी । अंतर्मन प्रवेशका मंथन करनेका बौध्दिक प्रयास साहित्यकार, उपन्यासकार, नाटककार ने भी शुरू किया ।

7] 20 वी शताब्दीके पाश्चात्य नाटककारोंका मनोवैज्ञानिक दृष्टीकोन :-

फ्राईडके अचेतन मनकी दृष्टी नाटककारोंमें भी शब्दांकित हुई । नये अविष्कारोंके साथ साथ मनोविश्लेषणभी पन्नोंपर तथा पात्रोंपर उभर आया। मानवकी अंतरात्मा अवम् पीडाको खींचना चाहा । फ्रायडीयन विचार और अंतर्निरीक्षणका प्रभाव, मार्क्सवादी विचारधारा, साम्यवाद सामाजिक, ऐतिहासिक, मनोरंजक नाटको में भी आता गया । व्यक्तीगत विश्लेषणोंमें नाटकोंमें, व्यक्तीकी आंतरिक भावना, प्रेम विरह, आदिका विश्लेषण आने लगा । साथ साथ चेतन, अचेतन, मानसिक प्रवृत्तियाँ भी आयी ।

व्यक्तीके अंतर्द्वंदको अपने नाटक का मूल आधार बनाकर अंतर्मुख पात्रोंके वर्णनके साथही पुरुष-स्त्रीका वैध-अवैध, प्रेम, विवाह पूर्व प्रेम, विवाह पश्चात प्रेम, स्त्री पुरुष पात्रोंमें , कुंठा-दमन, असाधारणता अवसाद, कामभाव आदि मनो विकृतियों में फ्राईड के सिध्दांतके अनुकरण हुये है । अनेक पात्रोंकी उलझन इसमें खुली है । जिसमें व्यक्तीगत चरित्र जीवन दर्शन व्यक्तीका मनो विश्लेषणात्मक विज्ञानका दर्शन मिलता है । सब पात्रोंकी रहस्यमय मनोभूमि दिखायी देती है ।

लक्ष्मीनारायण मिश्रके नाटकोंके स्त्री पात्र आत्मसमर्पण करनेके लिए भी उत्सुक है । कुछ पात्र, बुद्धीके प्रतिक है । कुछ हृदयके, श्रध्दा तथा भक्ति प्रकृतीके, अहिंसावृत्तीके, स्वातंत्र्यवृत्तीके व्यावहारिक, त्यागी, सत्य श्रध्दाशील दिखते है । कुछ पात्र बुध्दीपात्र बाहरसे दिखते है पर अंतरमें भावनाशील दिखाई देते है । इनके नारीपात्र कभी कभी रुढिवादी सामाजिक मान्यताओंको ठुकरा देती है । कभी अपमानित होती है, कभी स्वत्वका विचार करती है । कभी विद्रोह भी करते है तो कभी आलोचना भी । कभी भावुकताके फेरेमें पडकर अहंवादी पुरुषकी इच्छाके बहावमें अपनेको पूर्णतया बहाना और मिटाना पसंद नहीं है । कभीसामाजिक पर्देके भीतर छिपे हुये सुनी सत्यका उद्घाटन मनोवैज्ञानिक उपायोंसे करनेका प्रयास किया करते है । याने 20 वी शताब्दीमें नाटकोंव्दारा समाजसे व्यक्ती और परिस्थितीसे प्रवृत्तीकी दिशामें विकास विकासका क्रम है । बदलते युगके साथ नये मूल्योंकी अपेक्षा आत्मजगतका विचार चल रहा है । - अधिकाधिक मन:स्थितीयोंका विश्लेषण करके मनोविज्ञान प्रतिष्ठापन होता है । अर्थात फ्राईड एडलर युंग तथा अन्य आधुनिक मनोवैज्ञानिक आचार्योंकी मान्यताओंका विकास साहित्यके हर क्षेत्रमें आया है । इनके नाटकोंके पात्रोंका निर्माण भी व्यक्तीके अंतर्द्वन्द्व वासना, सेक्स, प्रेम तथा चेतन अचेतन प्रवृत्तियोंको लेकर हुआ है । फ्राईडके यौन सिध्दांतोंकी पाश्चात्य साहित्यको चिरंतन और सजन भूमियोंसे प्रभावित किया है । इन्हीके अनुसार सब पात्र अपना चरित्र बनाये बैठे है । जो प्रेमचंद युग तथा - प्रसादोत्तर युगकी देन है । जिन चरित्रोंमें भावना कामवासना, अनास्था घुटन फ्रस्ट्रेशन कादी विचार दिखता है । निराशा, कामपीडा, संघर्ष, भय अभिलाषा, ईर्षा, जुगुप्सा, जैसे अनेक रंग मनोविश्लेषण के आधारपर आ बैठे है ।

मनोविज्ञान तथा मनोवैज्ञानिक विश्लेषणके अेक बहुत बडा क्षेत्र साहित्यसे संबंधित रखा है । साहित्यमें भी Literature and Psychology & Psychological Ahalysis --

सुंदर तरीके से आ रहा है। यह एक विचार धारा एवं प्रवाह है। मानव इनसे बचनहीं सकता। तो समाज तथा साहित्य कैसे बचेगा ? चाहे फिर वह नाटक हो, उपन्यास हो, कथासाहित्य हो या काव्य हो।

प रि शि ष्ट

8] मूल प्रवृत्तियाँ

मूल प्रवृत्तीयाँ चौदह है

मूल प्रवित्तीयाँ (Instincts)		संबंधित संवेग (Allied Emotions)	
1. पलायन	Escape	भय	Fear
2. जुगुप्सा [संघर्ष]	Combal	क्रोध	Anger
3. विकर्षण	Repulsion	घृणा	Disgust
4. पित्रीय	Parental	वात्सल्य	Tender Emotie
5. याचना	Appeal	दुःख	Distress
6. समागम	~~Curiosity~~ Mating	वासना	Lust
7. कुतूहल	Curiosity	आश्चर्य	Wonder
8. अभिभव [दैन्य]	Submision	प्रतिकूल आत्मभावना	Negative self felling.
9. स्वाग्रह	Self Assertion	अनुकूल आत्मभावना	Positive self feding
10. यूथ	Gregarious	एकाकीपन	Feeling of Lonliness
11. आहारान्वेषण	Food Seeking	तृप्ता या स्वाद	Gusta
12. उपार्जन [प्राप्ती]	Acquistion	स्वत्त्व	Feeling of Ownership
13. रचना	Constriveness	सृजन	Felling of Crealiness
14. हास्य [हंसी]	Laughtes	विनोद [मनोरंजन]	Amsement

1• सरल शिक्षा मनोविज्ञान- मदनलाल जैन अध्याय 4 पृष्ठ 16

2• मैकडूगाल द्वारा प्रतिपादित मानवस्वभावकात मूल प्रवृत्तीयोंका साम्य नवरसों एवं स्थायीभावोंसे निम्नलिखित तालिकाके अनुसार किया जा सकता है ।

क्र•	रस	स्थायीभाव	मैकडूगाल द्वारा प्रतिपादित मूल प्रवृत्तियाँ	
1•	वात्सल्य	वात्सल्य	मातृभावना	Parental
2•	श्रृंगार	रति	काम	Sex
3•	भयानक	भय	भय	Escape
4•	बिभित्स	जुगुप्सा, घृणा	आकर्षण	Pepulsion
5•	रौद्र	क्रोध	क्रोध	Combal
6•	अद्भूत	विस्मय, औत्सुक्य	जिज्ञासा	Curiosity
7•	हास	हास	हास	Laughter
8•	वीर	उत्साह गर्व भावना	आत्मप्रतिष्ठा	Self Asseetion
		सर्जनोत्साह	निर्माण	Construction
		अधिकार	परिग्रह	Acauisition
9•	करुण	शोक		
		दैन्य		
		दु:खकातरता	अतिप्रार्थना	Appeal
		मिलनेच्छा	सामाजिकता	Gregariousness
		सहानुभूति		

1• आधुनिक नाटकोंकामनोवैज्ञानिक अध्ययन डॉ•गणेशदास गौड पृ•224

3) Ex

We need to understand the people. To understand humannuther we need first of all, to know the basic human wants. If we wish to understand why a man or a woman feels or behaves in some particular way. The first thing to do is to discover which of these great primany wants is expressing if self through such feelings or behaviour ?

Primary nihenitecl wants 2

Originaling Instinct.	want	Accompanying Feeling
1. All the simple instincts of handling ,eating, execising, snuggling warm, sleeping etc.	For bodily comfort	Hunger, cold, restless ness, sleeplesshess etc.
2. Playing Possum.	For a sence of Seccurity	paralysis fear.
3. Running away	To Escape	Panicky Fear .
4. Fawning and Cringing.	To propitateany one who has power to unjure to ingratiode oneself.	self abusement servile, defence, desire to propritiate and to gratiate.
5. Altracting attention and showing off	To be " ~~no ti & ied~~ Notified 2) Admired 3) Liked by 4) others of ones kind.	Self assertiveness vanity and a wish to be admired and liked.

6. Attracting and fighting	1. To hurt and injure 2. To over come and dominafe. 3. To feel superior	1. Anger animoisity hatred. 2. Desire to conqure.
7. Wooing and maling	To attract,place and Mate with one of the opposite sex.	Attrallion desire to interest and plase, longing amatineness.
8. Tending and proteeting	To lookafter and proteetsome one (childor mate) who is relatively - weak.	Tender ness and Proteetineness.
9. Seeking compa-nionship.	For the company and fallow feeling of other of ones kind.	Loneliness isolation.
10. Imitaling other of ones kind.	To be like other of ones own pach or set especially its leaders.	1. Admiralion. 2. Sense of being add.
11. Pursuing and hunting-	To catch and capture	The hunting feeling .
12. Exploring and discovering	To find out to know to understand-	Curiosity.
13. Returning to what is familiar	To return to familiar peoplo places and conditions.	Attachment home sickness conser-vatism etc.

(3) Our primary wants and needs of every normal man and woman

1. for bodily comfort.

2. For a sense of security.

3. To Escape

4. To Propitiate any one who has paower to mijure to ingratiate one self.

5. To be 1. Noticed 2. Admired 3. Liked by others of ones kind.

6. To Hurt and unijure To ever come and dominate To feel superior.

7. To attract, please and mate with one of the oppoait sex.

8. To Look after and projeclsome one (e. g. child or mate) who is relatively weak)

9.	Pursuing and hunting	To catch and capture	The hunting feeling.
10.	Exploring and discovering	To find out, to know, to understand.	curiosity.
11.	Returning to what is familar	To return to familiar people places and conditions.	Attachment home sickness conservatism etc.